एक दिवसीय व्याख्यान

विषयः— विकसीत भारत @ 2047

आज दिनांक 20.12.2023 को विश्वविद्यालय के कौशल विकास एवं उद्यमिता प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण अर्पित कर कार्यक्रम की शुरूवात की गयी। समस्त अतिथियों के स्वागत उपरांत अधिष्ठाता, छात्र कल्याण डॉ.एच.एस.होता द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

कार्यक्रम में विशष विशेषज्ञ के रूप में डॉ. बलराम सिंह, यू.एस.ए. उपस्थित थे। जो कि एक प्रसिद्ध बॉयो साइंटिस्ट है तथा कई पुस्तके लिख चुके है। उन्होंने आज के इस विषय पर अपने उद्‌बोधन में भारतीय संस्कृति, रामराज्य की परिकल्पना के आधार पर विकसीत भारत के सपनों को साकार करने की बात कही। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के भारत में आगमन के पूर्व लगभग 250 वर्ष पूर्व भारत विकसित था। भारतीय परम्परा सबको समान दृष्टि से देखता है। रामायण के दोहे का भी उन्होंने जिक्र किया और कहा कि— ''परहित सहित धर्म नहीं भाई'' अर्थात दूसरों के हित करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है और यही भारतीय परम्परा हमें सिखाती है। विकसित भारत की कल्पना विविधता के माध्यम से ही पूर्ण हो सकती है और भारत विविधताओं का देश है जिसमें अनेक धर्म, जाति, संस्कृति और विचारधाराओं के लोग निवास करते है। उन्होंने कहा कि रामराज्य के मापदंडों के आधार पर ही विकसित राष्ट्र की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। रामराज्य में प्रजातंत्र था। प्रजातंत्र में शिक्षा की अलग व्यवस्था थी। किसी भी कार्य को करके सीखना एक बड़ी कला होती है और इसी से ही प्रजातंत्र की स्थापना होती है। उन्होंने रामायण के दोहे को वैज्ञानिक आधार पर भी सिद्ध किया और कहा कि यदि आप दूसर की सेवा करते हैं तब आपको एक आत्मीय खुशी मिलती है और शरीर के भीतर अच्छे हार्मोन्स कार्य करते है। जहां पर जुड़े हैं वहीं रहकर सेवा करने से राष्ट्र विकसित होगा। हमारी परंपरा बहुत ही वैज्ञानिक है। इस संदर्भ में उन्होंने एक प्रसिद्ध पुस्तक द सेल्फिश जीन का भी जिक्र किया। उन्होंने विकसित राष्ट्र हेतु विभिन्न क्रमों का जिक्र भी किया तथा एक नये क्रम ''आयुर्वेद—योग वर्ल्ड ऑर्डर'' के अपने प्रतिपालन का भी जिक्र किया और कहा कि योग और आयुर्वेद व्यक्ति के जीवन शैली को परिवर्तित करने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते है। विकसित भारत हेतु हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बात करनी होगी उन्होंने रामायण एवं गीता के कई श्लोकों एवं दोहों का जिक्र करते हुए विकसित भारत की परिकल्पना हेतु उसे प्रासंगिक बताया और कहा कि हमें अपनी परम्परा संस्कृति और ज्ञान के आधार पर ही राष्ट्र को विकसित करने की दिशा में प्रयास करनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य अरूण दिवाकर नाथ वाजपेयी ने किया। उन्होंने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि डॉ. बलराम सिंह का व्याख्यान जमीन से जुड़ा व्याख्यान है। उन्होंने कहा कि जीवन मूल्यों के आधार पर ही विकसीत राष्ट्र बनाया जा सकता है। जीवन मूल्यों की कसौटिया रामचरित मानस एवं गीता के आधार पर ही संभव है।

डॉ. सिंह के बिलासपुर आकर इतने महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित व्याख्यान हेतु साधुवाद दिया और कहा कि उनके व्याख्यान का सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ रश्मि गुप्ता के द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम के अंत में डॉ. रेवा कुलश्रेष्ठ द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री शलेन्द्र दुबे, श्री जीतेन्द्र कुमार, डॉ.डीकलाधर, डॉ. श्रिया साहू एवं काफी संख्या में छात्रगण उपस्थित थे।